'जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त
भूषन बिन न बिराज ही कबिता बनिता मित्त।'

उनकी कविता में अलंकारों का प्राचुर्य है। संदेह, रूपक, अपह्नुति, श्लेष, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास तथा मुद्रा आदि उनके प्रिय अलंकार हैं।

(18) वस्तुत: हिन्दी साहित्य के पास अनेक रत्न हैं, जिनके नाम, गुण, उपयोगिता एवं प्रभाव भिन्न-भिन्न हैं। कबीर, तुलसी एवं प्रसाद अपने-अपने क्षेत्रों में अद्वितीय हैं। केशव का भी अपना महत्व है। आचार्यत्व को कवित्व से, व्युत्पत्ति को प्रतिभा से, पाण्डित्य को भावुकता से मिलाकर अपने बहुमुखी महत्व से अभिभूत कर देने की क्षमता रखनेवाला। 'केशव' सा दूसरा नाम देने के लिए हिन्दी बहुत दिनों से सोच रही है और न जाने कब तक सोचना पड़ेगा।

देन है। उन्होंने काव्यशास्त्रीय पक्ष को पूर्ण रूप से प्रतिष्ठापित किया। केशव का व्यक्तित्व चिन्तामणि युग की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली था। कवि एवं आचार्य दोनों ही रूपों में केशवदास युग के लिए प्रेरक रहे।

(15) संस्कृत के विद्वान होने के कारण उनकी भाषा संस्कृत गर्भित है। उनकी साहित्यिक ब्रजभाषा में बुन्देलखण्डी, अवधी, अरबी तथा फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

(16) कहीं - कहीं शब्दों को तोड़ - मरोड़ के भी रखा है। मुहावरों और ~~कहा~~ कहावतों के प्रयोग से उनकी भाषा की व्यंजकता में यथेष्ट अभिवृद्धि हुई है। उनकी भाषा माधुर्य, ओज और प्रसाद ये तीनों गुण यथास्थान मिलते हैं। शब्द शक्तियों में लक्षणा एवं व्यंजना का प्रयोग अधिक किया गया है। व्यंजना के कारण उनके संवाद हिन्दी साहित्य का प्रयोग अधिक किया गया है।

(17) रस के महत्व को समझाते हुए भी अलंकार को काव्य का अपरिहार्य अंग मानते थे। 'कविप्रिया' में उन्होंने स्वयं ही कहा है:

केशवदास का दोहा

का निरूपण किया गया है।

(9) रीतिकालीन अनेक कवियों एवं आचार्यों ने केशवदास से प्रेरणा ली। वे आचार्य होने के साथ-साथ रीतिकाल के प्रवर्तक भी थे।

(10) उन्होंने 'रामचन्द्रिका' महाकाव्य लिखकर महाकवि होने का परिचय दिया है।

(11) रतन बावनी, वीरसिंह देवचरित तथा जहाँगीर जस चन्द्रिका लिखकर क्रमशः वीर काव्य, चरित काव्य तथा प्रशस्ति काव्य के अभाव की पूर्ति की है।

(12) 'रामचन्द्रिका' संस्कृत महाकाव्य के लक्षणों से समन्वित है। 'रामचन्द्रिका' का कथानक विश्व विश्रुत है। इतिहास और काव्य सभी का विषय रामकथा रह चुका है। कवि ने आठ से अधिक प्रकार रखे हैं। शृङ्गार, वीर और शान्त तीनों रसों का सांगोपाङ्ग निरूपण मिलता है।

(13) उन्हीं अंशों के आधार पर उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहना न तो न्यायसंगत है और न उचित ही।

(14) ब्रजभाषा काव्य को केशव की अद्भुत बड़ी

(परिचय) (केशवदास) (Date/25/01/18)

(1) केशवदास का जन्म संवत् १६१८ में हुआ था।
(2) केशवदास का निधन संवत १६८० में हुआ था।
(3) केशवदास का जन्मस्थान ओरछा है।
(4) उन्हें कभी 'क्लिष्ट काव्य का प्रेत' कहा गया, है कभी 'पंडितापन' का आरोप उन पर लगाया गया और कभी उन्हें 'हृदयहीन' कवि बताया गया। और केशव अपने क्षेत्र में अद्वितीय है।

(5) वे सनाढ्य कुलोत्पन्न पं० कृष्णदत्त के पौत्र और पं० काशीनाथ के पुत्र थे।

(6) ये ओरछा नरेश मधुकर शाह के पुत्र राजा इन्द्रजीत के आश्रित थे। इनके पूर्वज भी ओरछा दरबार के ही आश्रित चले आ रहे थे।

(7) केशव ने अनेक काव्य ग्रंथों की रचना की है, उनमें से सात ही प्राप्य हैं:
(i) रतन बावनी (ii) रसिक प्रिया (iii) नखशिखव
(iv) बारहमासा (v) रामचन्द्रिका (vi) कविप्रिया
(vii) छन्दमाला (viii) वीरसिंह देवचरित (xi) विज्ञान
(*) • गीता (x) जहाँगीर जस चन्द्रिका।

(8) 'रसिक प्रिया' रस निरूपक है, 'कविप्रिया' अलंकार निरूपक, तो 'छन्द माला' में छन्दों